प्राकृतिक खेती का मृदा स्वास्थ पर प्रभाव

आशीष कुमार वर्मा

सस्य विज्ञान विभाग, अग्रवन हेरिटेज विश्वविद्यालय, आगरा– 283125, उ.प्र., भारत

***ईमेलः** ashishverma9787@gmail.com*

प्राकृतिक खेती रसायन मुक्त एवं टिकाऊ कृषि पद्धति है, जो मृदा स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण तथा मानव स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है। यह उत्पादन लागत कम करके किसानों की आय बढ़ाने में सहायक होती है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती इसी अवधारणा पर आधारित मॉडल है। हालांकि, सिंचाई की कमी, प्राकृतिक आदानों की अनुपलब्धता एवं पैदावार में गिरावट जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। सरकार की विभिन्न योजनाएँ एवं महिलाओं की भागीदारी, पारंपरिक व आधुनिक तकनीकों का समन्वय तथा प्राकृतिक आदानों को बढ़ावा देकर प्राकृतिक खेती को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

परिचय

बढ़ती आबादी को खिलाने के लिए, यह अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2050 तक खाद्य उत्पादन में 60% की वृद्धि की आवश्यकता होगी। यह बढ़ती खाद्य मांग दुनिया भर में किसानों को फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर रही है, जो पर्यावरण पर दबाव बनाता है और मरम्मत या बदलने की क्षमता से अधिक है। इसकी गंभीर गिरावट के लिए अग्रणी। प्राकृतिक खेती का सुझाव पारंपरिक और आधुनिक कृषि पद्धतियों दोनों में सुधार के लिए एक नवीन दृष्टिकोण के रूप में दिया गया है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और समुदायों की रक्षा करना है। इसमें भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना खाद्य उत्पादन को सक्षम करने की क्षमता है।

प्राकृतिक खेती का महत्व क्या है?

प्राकृतिक खेती एक ऐसी कृषि पद्धति है, जिसमें सिंथेटिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा अन्य रासायनिक पदाथों का उपयोग नहीं किया जाता है। इस कारण यह मानव स्वास्थ्य के लिए अधिक सुरक्षित मानी जाती है तथा रासायनिक अवशेषों से उत्पन्न स्वास्थ्य जोखिम को कम करती है। प्राकृतिक खेती से उत्पादित खाद्य पदाथों में पोषक तत्वों की गुणवत्ता अधिक होती है, जो बेहतर स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं। प्राकृतिक खेती का प्रमुख उद्देश्य उत्पादन लागत को कम करना, खेती के जोखिम को घटाना, सतत उत्पादन सुनिश्चित करना तथा फसल विविधीकरण एवं अंतरफसली प्रणाली के माध्यम से किसानों की शुद्ध आय में वृद्धि करना है। यह पद्धति मृदा स्वास्थ्य के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह मृदा के लाभकारी सूक्ष्मजीव, केंचुए, सूक्ष्मजीवी तथा अन्य लाभकारी जीवों की क्रियाशीलता को बढ़ावा देती है। इसके परिणामस्वरूप मृदा की उर्वरता, जैव विविधता एवं उत्पादकता में वृद्धि होती है। साथ ही, यह किसानों को कृषि, प्राकृतिक तथा घरेलू संसाधनों का उपयोग कर जैविक आदान तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे उत्पादन लागत में उल्लेखनीय कमी आती है।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती क्या है?

जीरो बजट प्राकृतिक खेती एक सतत् एवं पर्यावरण–अनुकूल कृषि पद्धति है, जो कृषि पारिस्थितिकी के सिद्धांतों पर आधारित है। इस पद्धति में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा अन्य बाहरी आदानों पर निर्भरता कम करने पर बल दिया जाता है। इस अवधारणा को वर्ष 1990 के दशक में सुभाष पालेकर द्वारा विकसित किया गया था। इसका प्रमुख उद्देश्य उत्पादन लागत को न्यूनतम करना, प्राकृतिक संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करना तथा पारंपरिक कृषि पद्धतियों के सतत सिद्धांतों को

बढ़ावा देना है। इस पद्धति में महंगे उर्वरक, कीटनाशक तथा अधिक सिंचाई पर निर्भरता घटाकर कम लागत में टिकाऊ एवं लाभकारी कृषि को प्रोत्साहन दिया जाता है।

भारत में खेती से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं ?

प्रति बूंद अधिक फसल : भारत के सकल फसल क्षेत्र (जीसीए) का केवल 52 % राष्ट्रीय स्तर पर सिंचित है। भले ही भारत ने आजादी के बाद से महत्वपूर्ण प्रगति की है, फिर भी कई खेत अभी भी सिंचाई के लिए मानसून पर निर्भर हैं, जिससे अधिक फसलें लगाने की उनकी क्षमता सीमित हो गई है।

प्राकृतिक आदानों की तत्काल उपलब्धता का अभाव : किसान अक्सर रासायनिक रसायन मुक्त कृषि में परिवर्तित होने में बाधा के रूप में आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक आदानों की कमी का हवाला देते हैं। प्रत्येक किसान के पास अपना प्राकृतिक निवेश विकसित करने के लिए समय, धैर्य या श्रम नहीं होता है।

फसल विविधीकरण का अभाव : भारत में कृषि के तेजी से व्यावसायीकरण के बावजूद, अधिकांश किसान मानते हैं कि अनाज हमेशा उनकी मुख्य फसल होगी (अनाज के पक्ष में न्यूनतम समर्थन मूल्य कम होने के कारण) और फसल विविधीकरण की उपेक्षा करते हैं।

पैदावार में गिरावट : भारत के पहले जैविक राज्य सिक्किम में जैविक खेती अपनाने के प्रारंभिक चरण में कुछ फसलों की उपज में गिरावट देखी गई थी। इसी प्रकार, शून्य–बजट प्राकृतिक खेती को अपनाने के प्रारंभिक चरण में भी कुछ किसानों को उपज में कमी का अनुभव हुआ, जिसके कारण कुछ किसान पुनः पारंपरिक खेती की ओर लौट गए। हालांकि, उचित प्रबंधन एवं समय के साथ प्राकृतिक खेती में उपज को स्थिर किया जा सकता है।

सतत कृषि से संबंधित हाल की सरकारी पहलें क्या हैं ?

- सतत कृषि पर राष्ट्रीय मिशन
- परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई)
- कृषि वानिकी पर उप–मिशन
- राष्ट्रीय कृषि विकास योजना
- पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए जैविक मूल्य श्रृंखला विकास मिशन

आगे का रास्ता क्या होना चाहिए ?

प्राकृतिक खेती में महिलाओं की भागीदारी : अध्ययनों ने संकेत दिया है कि प्राथमिक उत्पादक के रूप में कृषि संसाधनों पर महिलाओं के नियंत्रण और उनके परिवार की सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं के बीच सीधा संबंध है। चूंकि महिलाएं ज्यादातर अपने परिवारों के लिए खाना बनाती हैं, इसलिए वे अपने बच्चों के पोषण और पोषण के लिए प्राकृतिक उत्पादों के महत्व को समझती हैं। नतीजतन, महिलाओं के पुरुषों की तुलना में जल्द ही प्राकृतिक खेती अपनाने की संभावना है। प्राकृतिक खेती में महिलाओं की भागीदारी से निर्णय लेने में उनकी भागीदारी बढ़ेगी। यह परिवार के स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगा।

पारंपरिक एवं आधुनिक तकनीकों का एकीकरण : पौधों के पोषक तत्वों की आपूर्ति, कीट एवं रोग प्रबंधन, वर्षा जल संचयन, जैविक कचरे का पुनर्चक्रण आदि पारंपरिक तकनीकों के प्रमुख

उदाहरण हैं। इन तकनीकों को ऊतक संवर्धन, जैविक प्रौद्योगिकी तथा अन्य आधुनिक तकनीकों के साथ समन्वित रूप से अपनाकर उच्च उत्पादकता एवं सतत् कृषि को बढ़ावा दिया जा सकता है।

सतत् कृषि के लिए समन्वित दृष्टिकोण : भारत की कृषि पद्धतियों में विविधता पाई जाती है, इसलिए विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल समाधान विकसित करने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर विविध दृष्टिकोणों को शामिल करना आवश्यक है। प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों को आधुनिक तकनीकों के साथ समन्वित करने से किसानों की आय में वृद्धि के साथ–साथ सतत् कृषि विकास को भी बढ़ावा मिल सकता है।

प्राकृतिक आदानों की उपलब्धता एवं उद्यमशीलता : रसायन मुक्त कृषि के लिए आवश्यक प्राकृतिक आदानों के उत्पादन तथा उपलब्धता को बढ़ावा देने के लिए लघु एवं सूक्ष्म उद्यमों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ग्रामीण स्तर पर प्राकृतिक आदान निर्माण केन्द्रों एवं वितरण व्यवस्था को विकसित करने के साथ–साथ सरकारी सहायता भी उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

प्राकृतिक पारिस्थितिकी आधारित कृषि प्रणाली का विकास : कृषि उत्पादकता एवं प्रकृति संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए प्राकृतिक पारिस्थितिकी पर आधारित कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देना आवश्यक है। खेतों में उपयुक्त पेड़, झाड़ियाँ, बारहमासी घास तथा अन्य उपयोगी वनस्पतियों को शामिल करके प्राकृतिक पारिस्थितिकी के अनुकूल एक सतत् एवं पर्यावरण–अनुकूल कृषि प्रणाली विकसित की जा सकती है।

निष्कर्ष

प्राकृतिक खेती एक पर्यावरण–अनुकूल, सतत् एवं कम लागत वाली कृषि पद्धति है, जो मृदा स्वास्थ्य, जैव विविधता तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को बढ़ावा देती है। इस पद्धति में रसायन मुक्त उत्पादन पर बल दिया जाता है, जिससे खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता में सुधार होता है और मानव स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह किसानों की उत्पादन लागत को कम करने, आय में वृद्धि करने तथा सतत् कृषि विकास को बढ़ावा देने में सहायक है। अतः वैज्ञानिक अनुशंसाओं एवं स्थानीय संसाधनों के उचित उपयोग के साथ प्राकृतिक खेती को भारतीय कृषि के एक महत्वपूर्ण एवं भविष्योन्मुख विकल्प के रूप में अपनाया जाना चाहिए।